परिचय

एज्रा और नहेम्याह की पुस्तकें मूल्यवान हैं क्योंकि वे परमेश्वर की वाचा के लोगों के ऐतिहासिक लेख को पूर्ण करती हैं। उनके अभाव में हमारे पास बहुत कम जानकारी होती कि यहूदियों का बाबुल की वर्षों की बंधुवाई के बाद क्या हुआ।

निश्चय ही ये दोनों पुस्तकें ऐतिहासिक जानकारी से भी अधिक उपलब्ध करवाती हैं। साथ मिलकर ये हमें समझने में सहायता करती हैं कि परमेश्वर ने एज्रा, नहेम्याह, और अन्य यहूदी अगुवों में होकर किस प्रकार से कार्य किया, जिससे मूर्तिपूजा से सुधारी गई जाति सुरक्षित रहे। ये एज्रा के समय के यहूदियों को प्रभु के साथ वाचा से बंधे हुए - ऐसे लोग जिनका धर्म का जीवन व्यवस्था और मंदिर पर केंद्रित था, और जिनमें होकर परमेश्वर अन्ततः मसीहा को संसार में लाएगा, दिखाती हैं। ये पुस्तकें दिखाती हैं कि परमेश्वर अपने लोगों में किस प्रकार से पुनः परिवर्तन लेकर आया जिसमें (1) देश में लौटना, (2) मंदिर का पुनः निर्माण, और (3) उनका पापों से पश्चाताप सम्मिलित था।

नाम और वर्गीकरण

एज्रा की पुस्तक का नाम उसके मुख्य चरित्र, एज्रा, से लिया गया है, जो कि एक "याजक" और "शास्त्री" था (7:11)। बाबुल की बंधुवाई से यहूदियों के प्रथम लौटने के लगभग अस्सी वर्ष के बाद, उसकी अगुआई में यहूदियों का एक जत्था बाबुल से यरूशलेम आया परमेश्वर की व्यवस्था को सिखाने और यहूदियों को उसे मानना सिखाने के उद्देश्य से (7:7-26)।

यहूदी परंपरा एज्रा को एक याजक और शास्त्री से कहीं अधिक बढ़कर देखती है। उसे लगभग दूसरे मूसा जैसा देखा जाता है, जो लिखित व्यवस्था के लिए व्यक्तिगत रीति से उत्तरदायी था। प्रेरणारहित लेखों में, उसे चौरानवे पुस्तकों को, जो बाबुल के निर्वासन में खो गईं थीं, जिनमें से चौबीस पुराने नियम की पुस्तकें हैं[1], बोलकर लिखवाने का श्रेय दिया जाता है। इसलिए, वह "प्रारंभिक चरणों से लेकर महान रब्बियों के अग्रदूतों तक धार्मिक परंपराओं को सुरक्षित रखने वाला" बना और इस प्रकार वह "कुछ बातों में मूसा के समान स्थान रखने वाला" बन गया।[2] यद्यपि इस परंपरा को सम्पूर्णता सत्य तो स्वीकार नहीं किया जा सकता है, यह संभव है कि एज्रा ने उन पवित्र लेखों को एकत्रित करने में सहायता की, जिनसे पुराना नियम बना।

एज्रा और नहेम्याह को अंग्रेज़ी बाइबल में "इतिहास" की पुस्तकों में वर्गीकृत किया जाता है। दूसरी ओर, इब्रानी बाइबल में, एज्रा और नहेम्याह को हम "लेखों" (*केथुबिम* या *हगियोग्राफा*) में पाते हैं। इब्रानी बाइबल के अन्य दो वर्ग हैं "व्यवस्था"

और "भविष्यद्वक्ता।" "व्यवस्था" या *तोरह* में पुराने नियम की पहली पाँच पुस्तकें, पेंटाट्यूक सम्मिलित हैं; "भविष्यद्वक्ता" या *नबी'इम* में "आरंभिक भविष्यद्वक्ता" (यहोशू, न्यायियों, शमूएल, राजा) और "बाद वाले भविष्यद्वक्ता" (यशायाह, यिर्मयाह, यहेजकेल, और "वे बारह" [लघु भविष्यद्वक्ता]) सम्मिलित हैं। "लेख" कहलाए जाने वाले खण्ड में पुराने नियम की अन्य सभी पुस्तकें सम्मिलित हैं।

अन्य पुस्तकों से संबंध

एज्रा, नहेम्याह, और इतिहास में संबंध

आरंभिक लेख संकेत करते हैं कि इब्रानी बाइबल में एज्रा और नहेम्याह को एक ही पुस्तक माना जाता था।[3] मैसोरेटिक लेख (एमटी) में शास्त्री एज्रा 10 के अन्त और नहेम्याह 1 के आरंभ में कोई स्थान नहीं छोड़ते थे, और दोनों की आयतों के आंकड़े नहेम्याह के अन्त में उपलब्ध करवाए गए थे।[4] अन्य यहूदी लेख भी इन दोनों कृतियों को एक ही पुस्तक मानते थे।[5]

एज्रा और नहेम्याह, इतिहास की पुस्तकों के साथ मिलकर एक इकाई बनाते हैं। परन्तु इब्रानी बाइबल में एज्रा/नहेम्याह को इतिहास की पुस्तकों से पहले रखा गया है। इसलिए इब्रानी बाइबल को पढ़ने वाला व्यक्ति पढ़ते हुए सीधा इतिहास से एज्रा की पुस्तक पर नहीं आता है, जैसा कि अंग्रेज़ी बाइबल में होता है।

इतिहास की पुस्तकों में बताया गया इतिहास एज्रा और नहेम्याह में जारी रहता है। वास्तव में, 2 इतिहास की अंतिम दो आयतें एज्रा की पहली ढाई आयतों के समान हैं। ये पुस्तकें, एक प्रकार से, उत्पत्ति से लेकर राजाओं की पुस्तकों तक में दिए गए इतिहास का एक वैकल्पिक ऐतिहासिक वृत्तान्त उपलब्ध करवाती हैं। उत्पत्ति के समान, इस वैकल्पिक इतिहास का आरंभ आदम के साथ होता है, (इतिहास की पुस्तक में दी गई वंशावलियों के माध्यम से); वे बाबुल के निर्वासन तक जाती हैं (2 इतिहास 36), जैसा कि 2 राजा में भी है; और फिर वे राजाओं के आगे भी जारी रहती हैं, उससे आगे के समय में यहूदियों के बंधुवाई से लौटने के बारे में बताने के द्वारा (एज्रा/नहेम्याह)।

एज्रा और नहेम्याह का एपोक्रिफा की पुस्तक 1 एस्द्रास से संबंध

एज्रा और नहेम्याह एपोक्रिफा की पुस्तक 1 एस्द्रास ("एस्द्रास" इब्रानी नाम "एज्रा" का यूनानी समतुल्य है) से भी संबंधित प्रतीत होते हैं।[6] *द न्यू ऑक्सफोर्ड एनोटेटिड बाइबल* में 1 एस्द्रास के परिचय में लिखा है,

> पुस्तक का आरंभ कुछ आकस्मिक होता है राजा योशिय्याह द्वारा यरूशलेम में फसह के बड़े पर्व के मनाने (लगभग 621 ई.पू.) के विवरण के साथ, और पुस्तक में 2 इतिहास 35:1-36:23, संपूर्ण एज्रा, और नहेम्याह [7.73 - 8.13] से ले कर के लिख दिया गया है, और एज्रा द्वारा लाए गए सुधारों (लगभग 458 ई.पू.) के लेख के बाद, लेख मध्य-वाक्य में समाप्त हो जाता है। एपोक्रिफा और कैनन के वृतांतों में अनेकों छोटी-छोटी विसंगतियां हैं, जिनमें सामग्री को पुनः

व्यवस्थित करना; और [एक कहानी के जोड़ा जाना] दारा के राज-दरबार में तीन जवान पुरुषों के विषय में ...[7]

1 एस्द्रास की पुस्तक (जैसा उसके नाम से संकेत मिलता है) केवल यूनानी में ही विद्यमान है, परन्तु उसे इब्रानी लेख का अनुवाद माना जाता है।[8]

बाइबल की पुस्तकों और 1 एस्द्रास के मध्य का संबंध अस्पष्ट है; यह बाइबल की सामग्री का अनुवाद हो सकता है,[9] या यह किसी इब्रानी हस्तलेख से हो सकता है जो इब्रानी बाइबल में पाए जानेवाले लेख से कुछ भिन्न था। एज्रा और नहेम्याह की कैनन के अनुसार पुस्तकों को समझने या उनके कठिन खण्डों के स्पष्टीकरण के लिए, अनुवादक एवं व्याख्याकर्ता, कभी-कभी 1 एस्द्रास की पुस्तक का प्रयोग करते हैं।

पुस्तक का लेखन

लेखक और तिथि

एज्रा/नहेम्याह और इतिहास की पुस्तकों की समानताओं के कारण बहुधा यह माना जाता है कि इतिहास की पुस्तकों का लेखक (जिसे कभी-कभी "इतिहासकार" कहकर संबोधित किया जाता है) ने ही एज्रा और नहेम्याह को भी लिखा,[10] जिससे एज्रा एक वृहत कृति का भाग हो जाता है जिसमें, मूल रूप में, इतिहास, एज्रा, और नहेम्याह सम्मिलित थे। कुछ इन सभी पुस्तकों का लेखक एज्रा को ही मानते हैं।[11] यदि एज्रा ही लेखक है, तो सभी पुस्तकें लगभग एक ही समय में लिखी गईं थी, लगभग 450 से 425 ई.पू. में। किन्तु कुछ को संदेह है कि एज्रा इतिहास का लेखक था और सामान्यतः इतिहास की तिथि एज्रा के बाद की लगाते हैं। उदाहरण के लिए आर. के. हैरिसन का निष्कर्ष था कि इतिहासकार एज्रा से भिन्न था, और "एज्रा तथा नहेम्याह उन लेखों के लिए उत्तरदायी हैं जो उनके नाम से जाने जाते हैं," और इन लेखों की तिथि को "लगभग 440 और 430 ई.पू., क्रमवार, माना जाना चाहिए," और इतिहास की पुस्तकों की तिथि को "लगभग 400 ई.पू. या उससे कुछ बाद" माना जाना चाहिए।[12]

यदि इतिहास एज्रा के द्वारा नहीं लिखा गया, तो इस तथ्य से एज्रा और नहेम्याह के लेखकों के प्रश्न पर कोई प्रभाव नहीं होगा। यहूदी स्रोतों के द्वारा एज्रा को "एक पुस्तक" लिखने का श्रेय दिया जाता है।[13] निश्चय ही उसने एज्रा की पुस्तक में उसके माने जाने वाले संस्मरण (प्रथम व्यक्ति वाले खण्ड) लिखे हैं, और संभवतः उसने पुस्तक के वृतांत वाले खण्ड भी लिखे हैं। जौन सी. व्हिटकोंब, जूनियर, इस मूल्यांकन से सहमत हैं: "यह बहुत संभव है कि स्वयं एज्रा ने ही इस पुस्तक को लिखा, विभिन्न आज्ञाओं, पत्रों, और वंशावलियों को अपना मूल स्रोत बनाकर।"[14] किन्तु पुस्तक स्वयं अपने लेखक की पहचान नहीं प्रदान करती है।

स्रोत

इन दो पुस्तकों में अनेकों लेखों से लिया गया है - जिनमें एज्रा के संस्मरण

(देखिए अध्याय 8 और 9, जिनमें एज्रा ने प्रथम-व्यक्ति प्रयोग किया है), नहेम्याह के संस्मरण (नहेम्याह 1; 2; 4-7; 12; 13 में प्रथम-व्यक्ति प्रयोग को देखें), सूचियाँ, और आधिकारिक पत्र तथा लेख (उदाहरण के लिए एज्रा 7:11-26)। लेखक, चाहे एज्रा या कोई अन्य रहा हो, वह लेखक भी था और संकलनकर्ता भी।

भाषाएँ

एज्रा की पुस्तक इस बात के कारण असाधारण है कि उसके कुछ खण्ड अरामी भाषा[15] में लिखे गए थे (4:8 - 6:18; 7:12 - 26)। अरामी भाषा में लिखे ये खण्ड मुख्यतः आधिकारिक लेखों के हैं। क्योंकि उस समय में राजनैतिक/कूटनैतिक कार्यों के लिए अरामी अन्तरराष्ट्रीय भाषा थी, इसलिए इसमें कोई अचरज की बात नहीं है कि उसे इस पुस्तक के इन खण्डों के लिए प्रयोग किया गया था। लगभग शेष समस्त पुराना नियम इब्रानी में लिखा गया।[16]

कालानुक्रम

पारंपरिक दृष्टिकोण

एज्रा/नहेम्याह के कालानुक्रम का विश्वसनीय दृष्टिकोण है कि इन पुस्तकों की घटनाओं को लेख में दिए गए हवालों के अनुसार तिथिबद्ध किया जा सकता है। एज्रा 1:1 बंधुवाई से यहूदियों की पहली वापसी की तिथि "फारस के राजा कुस्रू के पहिले वर्ष में" प्रदान करता है। कुस्रू ने बाबुल में 539 ई.पू. में राज करना आरंभ किया था; इसलिए यह वापसी उसके बाद के पहले ही वर्ष में आरंभ हो गई, या 538 ई.पू. में। इसी प्रकार एज्रा 7:7 यहूदियों के एज्रा के साथ "अर्तक्षत्र राजा के सातवें वर्ष में" लौट कर आने, या 458 ई.पू. में आने को तिथिबद्ध करता है। नहेम्याह 2:1-7 में, बताया गया है कि नहेम्याह "अर्तक्षत्र राजा के बीसवें वर्ष में," लगभग तेरह वर्ष उपरान्त यरूशलेम गया था (445 ई.पू.)। इस जानकारी के साथ, इन पुस्तकों (तथा एस्तेर की पुस्तक) की घटनाओं को जो यरूशलेम के विनाश के पश्चात घटित हुईं, निम्न रीति से तिथिबद्ध किया जा सकता है:

538 ई.पू. - बंधुआई से जरूब्बाबेल के साथ यहूदियों की प्रथम वापसी, जो फारस के राजा कुस्रू II की आज्ञा का परिणाम था (एज्रा 1:1-3; 2:1, 2)

537 ई.पू. - यरूशलेम के मंदिर का पुनः निर्माण आरंभ होना (एज्रा 3:6-10)

520 ई.पू. - मंदिर के पुनःनिर्माण का जारी रहना, हाग्गै और ज़कर्याह की भविष्यवाणियों के प्रोत्साहन द्वारा (एज्रा 5:1, 2)

516 ई.पू. - मंदिर का पूर्ण होना और समर्पित किया जाना (एज्रा 6:14-16)

483 - 473 ई.पू. - एस्तेर की पुस्तक की घटनाएं, राजा क्षयर्ष I के समय में (एस्तेर 1:1-3; 2:16; 3:7)

458 ई.पू. - सुधारक एज्रा के साथ यहूदियों की दूसरी वापसी, राजा अर्तक्षत्र I से अनुमति प्राप्त करने के पश्चात (एज्रा 7:1-10)

445 ई.पू. - यरूशलेम की दीवार बनाने के लिए नहेम्याह की वापसी, राजा

अर्तक्षत्र I से अनुमति प्राप्त करने के पश्चात (नहेम्याह 1:1 - 2:20; 6:15)
433 ई.पू. - नहेम्याह की फारस वापसी, जिसके पश्चात उसने यरूशलेम के लिए दूसरी यात्रा भी की (नहेम्याह 13:6, 7)

एक वैकल्पिक दृष्टिकोण

एज्रा और नहेम्याह की पुस्तकों के संबंध में एक वैकल्पिक कालानुक्रम दृष्टिकोण है कि नहेम्याह एज्रा से पहले था। इस बात को मानने वालों के तर्कों में से एक है कि यदि एज्रा व्यवस्था को सिखाने और मनवाने के लिए यहूदा में 458 ई.पू. में गया (एज्रा 7:1-10) तो परमेश्वर के लोगों को व्यवस्था को पढ़कर सुनाने के लिए (नहेम्याह 8:1-18) वह नहेम्याह के आने तक प्रतीक्षा नहीं करता। इसके अतिरिक्त, उनका यह भी तर्क है कि यह मानना अनुचित है कि जब एज्रा ने मिश्रित विवाहों की समस्या का समाधान कर लिया था (एज्रा 9:1-15), तो नहेम्याह को फिर से उसी समस्या का सामना करना पड़ता और वह भी उससे वैसा ही व्यवहार करता, जैसा उसने किया (नहेम्याह 13:23-29)।

एज्रा के लौटने को एज्रा 7:7 के आधार पर तिथिबद्ध करने को तब दो में से एक आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है। कुछ का मानना है कि यह इब्रानी लेख में किसी शास्त्री द्वारा हो गई त्रुटि है, जिसे वास्तव में "सत्ताईसवें वर्ष" या "सैंतीसवें वर्ष" (438 या 428 ई.पू.) होना चाहिए था न कि "सातवें वर्ष" (458 ई.पू.)। किसी भी ज्ञात हस्तलेख में इन दोनों में से कोई एक भी वैकल्पिक लेख विद्यमान नहीं है। एक अन्य विचार है कि एज्रा 7:7 का संदर्भ अर्तक्षत्र II से है न कि अर्तक्षत्र I से जिससे एज्रा का लौटना लगभग 398 ई.पू. तिथिबद्ध हो जाता न कि 458 ई.पू.।[17] एज्रा के लौटने को इतना बाद में तिथिबद्ध करने के साथ यह समस्या है कि यह नहेम्याह 8:9; 12:26, 36 का प्रतिवाद करता है जो एज्रा और नहेम्याह को एक साथ कार्य करते हुए वर्णन करते हैं।

नहेम्याह के पहले आने के तर्कों का उत्तर संतोषजनक रीति से दिया जा सकता है।[18] उदाहरण के लिए, ऐसी कोई आवश्यकता नहीं है कि यह मान लिया जाए कि क्योंकि एज्रा ने व्यवस्था को नहेम्याह के आने के बाद सार्वजनिक रीति से पढ़ा था, इसलिए उसने ऐसा पहले कभी नहीं किया होगा। इसके अतिरिक्त, क्योंकि नहेम्याह ने मिश्रित विवाहों के प्रति व्यवहार किया था, इससे यह प्रमाणित नहीं होता है कि एज्रा ने भी ऐसा नहीं किया होगा। यहूदियों ने अपने संपूर्ण इतिहास में यह प्रमाणित किया है कि परमेश्वर के प्रवक्ताओं के सर्वोत्तम प्रयासों के होते हुई भी, वे लोग अपने पुराने पापमय व्यवहार में लौट जाने की प्रवृत्ति रखते थे। डेरेक किडनेर का यह निष्कर्ष था:

> ... यह कहना उचित लगता है कि बाइबल में दिए गए क्रम के विरुद्ध कोई भी आपत्ति, प्रमुख अथवा गौण, बाध्य कर देने वाली है, और यह भी संकेत किया जा सकता है कि अधिकांश लेखकों द्वारा सुझाए गए पुनः विचारों में मात्र संभावना से अधिक प्रबल कुछ भी नहीं है। यदि ऐसा है तो, जो लेख हमारे पास है निश्चय ही वह उन लेखों से, जो हमारे पास नहीं हैं, अधिक महत्व का है। और

> वास्तविक के काल्पनिक के ऊपर पहले दावे के अतिरिक्त, हमने जो भी चर्चा की हैं उनमें से किसी में इतना बल नहीं है कि वह हमारे लेखक के विरोध में दी गई इस संभावना को पर्याप्त वज़न दे सके कि ऐसा कैसे संभव हो गया कि उन दोनों के परस्पर संबंध के होने या न होने, और न ही कौन किससे पहले आया की जानकारी के विषय वह बिलकुल अनभिज्ञ था, यद्यपि वह विवरण के प्रति निष्ठावान था, और अपने मुख्य पात्रों के संबंध के प्रथम-व्यक्ति लेखों तक पहुँच रखता था।[19]

इसलिए, ऐसा कोई तर्क नहीं उठा है जिससे पारंपरिक बाइबलानुसार कालानुक्रम का तिरस्कार किया जाए।

महत्व

एज्रा की पुस्तक को, सामान्य रूप से, इस्राएल के धर्म के पुनःस्थापन के विषय में कहा जा सकता है। बाबुल की बंधुवाई के समय, यहूदियों ने अपने परमेश्वर अथवा धर्म को छोड़ नहीं दिया था; परन्तु उन्हें धर्म के बाहरी चिन्हों और सहारों से वंचित कर दिया गया था। यहूदियों के लौटने से उनमें से कुछ चिन्ह पुनः स्थापित हो गए।

पुस्तक विशिष्ट रीति से संकेत करती है कि धर्म की पुनःस्थापना हुई (1) उनके प्रतिज्ञा किए हुए देश में लौट आने के द्वारा, (2) उनके द्वारा मंदिर के पुनर्निमाण के द्वारा, और (3) उनके द्वारा किए गए पश्चाताप के द्वारा। उनके सुधार का आधार, परमेश्वर की व्यवस्था पर दिया गया महत्व था (एज्रा 7-10)। इस्राएल की धार्मिक पुनः जागृति में व्यवस्था की महत्वपूर्ण भूमिका थी,[20] और व्यवस्था का पालन करना उस पुनः जागृति का उद्देश्य बन गया।

ऐतिहासिक संदर्भ

उसके एक स्वतंत्र राष्ट्र होने के इतिहास के अंतिम चरण में दक्षिणी राज्य यहूदा बाबुल के साम्राज्य का एक भाग था। यहूदियों ने अनेकों बार बाबुल के विरुद्ध बलवा किया; परन्तु हर बार बाबुल के लोगों ने यहूदा के विरुद्ध सैनिक बल प्रयोग किया और बलवे को दबा दिया, और यहूदा से कुछ लोगों को अपने साथ बाबुल को ले गए।[21] ऐसा लगभग 605 ई.पू. में हुआ (जैसा दानिय्येल 1:1-4 में दर्ज है), और दोबारा लगभग 597 ई.पू. (2 राजा 24:10-17), और फिर से 586 ई.पू. में। यहूदियों के बाबुल के विरुद्ध 588 ई.पू. में बलवा करने के पश्चात, नबूकदनेस्सर राजा ने राष्ट्र पर हमला किया, उस पर विजयी हुआ, उसने यरूशलेम और मंदिर का नाश किया, और यहूदियों का एक विशाल निर्वासन करवाया (2 राजा 24:20-25:21; 2 इतिहास 36:17-21)।

देश में केवल बहुत निर्धन लोग ही बचे रह गए (2 राजा 25:12)।[22] इसके अतिरिक्त, वह जो इस्राएल का उत्तरी राज्य हुआ करता था, उसमें उन लोगों के वंशज निवास कर रहे थे जिन्हें अश्शूर के लोगों ने सौ वर्ष से भी पूर्व वहाँ रखा था,

जब वे उत्तरी राज्य के लोगों को बंधुआ बनाकर ले गए थे (2 राजा 17:22-41)। यहूदा के उत्तर का वह क्षेत्र, अन्ततः "सामरिया" कहलाने लगा; और उसके निवासी "सामरी" कहलाए (2 राजा 17:29; KJV; ESV)।

जो निर्वासित किए गए थे उनके लिए जीवन कठिन रहा होगा, विशेषकर आरंभ में। उनका प्रिय शहर ध्वस्त कर दिया गया था।[23] वे एक विदेशी स्थान में परदेशी थे और इसलिए संभवतः उन्हें हीन समझा जाता था। सबसे महत्वपूर्ण बात, उन्हें मंदिर से वंचित कर दिया गया था - जो उनकी उपासना का स्थान था! वे बिना मंदिर के परमेश्वर की उपासना कैसे कर सकते थे? (देखें भजन 137.)

फिर भी परिस्थिति पूर्णतः अंधकारमय नहीं रही। कुछ यहूदी उच्च पदों पर आसीन हुए, सर्वप्रथम बाबुल के शासन में और फिर फारस के अधिकारी वर्ग में।[24] यिर्मयाह ने अपने भाइयों से कहा कि झूठे भविष्यद्वक्ताओं के सन्देश के विपरीत, वे लंबे समय तक निर्वासन में रहेंगे - सत्तर वर्ष तक। इसलिए, उन्हें बाबुल में बस जाना चाहिए (यिर्म. 29:4-10)। प्रतीत होता है कि यहूदियों ने वैसा ही किया जैसे उसने निर्देश दिए थे, और बहुतेरे समृद्ध हो गए। वास्तविकता में, जब यहूदा लौट जाने का अवसर प्रदान किया गया, तब अनेकों ने बाबुल में ही बसे रहने का निर्णय लिया।[25] जो बसे रह गए, वे इतने संपन्न थे कि एज्रा के साथ लौटने वालों को उदार भेंटें प्रदान कर सकें एज्रा (1:6)।

निर्वासन के समय में यहूदियों की जीवन-शैली में महत्वपूर्ण परिवर्तन आए, और उनके कारण यहूदी धर्म पर तब से आगे गंभीर प्रभाव हुए। क्योंकि वे मंदिर से दूर थे, इसलिए ऐसा लगता है कि आराधनालय (तथा आराधनालय की आराधना) का आरंभ इस समय से हुआ। यहूदी ऐसे लोग हो गए जो लिखित व्यवस्था के साथ अधिक और किसी भौतिक स्थान के साथ कम संबंधित थे।

जब यहूदी बंधुवाई में थे, बाबुल फारस के कुस्रू महान के अधीन आ गया। कुस्रू ने 539 ई.पू. से 530 ई.पू. तक राज्य किया और उसके बाद निम्नलिखित फारसी शासकों ने राज्य किया (सभी तिथियाँ ईस्वी पूर्व में हैं):

कैम्बिसिस	530-522
गौमाता	522
दारा I	522-486
क्षत्र/ज़र्कसिस I (क्षयर्ष)	486-465
अर्तक्षत्र I	465-424
क्षत्र/ज़र्कसिस II	424
सोगदियानोस	424-423
दारा II	423-404
अर्तक्षत्र II	404-358
अर्तक्षत्र III	358-338
अर्तक्षत्र IV	338-336
दारा III	336-331

कुस्रू ने, जो अनजाने में परमेश्वर के कहे को पूरा कर रहा था, राजाज्ञा निकाली, जिससे लगभग 538 ई.पू. में यहूदियों को अपनी गृहभूमि को वापस लौटने की अनुमति मिली। यहूदियों के प्रति उसका व्यवहार अन्य बंधुआ लोगों के संबंध में उसकी नीतियों के अनुरूप था। अश्शूरियों और बाबुल के लोगों की नीति थी कि परेशान करने वाले लोगों को शान्त और हताश करने के लिए उन्हें निर्वासित कर देते थे। इसकी तुलना में, फारस के राजाओं की नीति होती थी कि निर्वासित लोगों को वापस लौटने की अनुमति प्रदान करते थे, संभवतः उनकी मित्रता जीतने के उद्देश्य से, जिससे फिर उनकी निष्ठा भी प्राप्त हो सके।

कुस्रू की नीति से परमेश्वर का उद्देश्य पूरा हुआ। उसकी राजाज्ञा के परिणामस्वरूप, बाबुल से लगभग पचास हज़ार लोग लौट कर यहूदा को आए।[26] न केवल कुस्रू ने यहूदियों को लौटने की अनुमति प्रदान की, परन्तु उसने उन्हें वह बची हुए सामग्री भी वापस कर दी जो राजा नबूकदनेस्सर मंदिर से तब उठा लाया था जब उसने यरूशलेम पर विजय प्राप्त की थी (1:7-11; देखें 2 राजा 24:12, 13; 25:14-17; 2 इतिहास 36:7,18; दानिय्येल 1:1, 2)। यहूदियों की इस पहली वापसी का वर्णन एज्रा 1 और 2 में दिया गया है।

पलिस्तीन में, यहूदी निर्धन और दुर्बल थे। वे अपने फारसी स्वामियों के अधीन थे। इसके अतिरिक्त, वहाँ रहने वाले लोग - जो उनके वंशज थे जो तब पीछे रह गए थे जब उत्तरी और दक्षिणी राज्यों को निर्वासित किया गया था, उनका विरोध करते थे। फिर भी उन्होंने अपने प्रथम बड़े कार्य-योजना को आरंभ किया: मंदिर का पुनर्निर्माण। मन्दिर की नींव डाली गई (एज्रा 3), परन्तु उस देश के अन्य निवासियों का प्रतिरोध प्रभावी हुआ, और मंदिर के निर्माण का कार्य पन्द्रह या सोलह वर्ष तक रुका रहा (एज्रा 4)।

520 ई.पू. में, हाग्गै और ज़कर्याह भविष्यद्वक्ता उठे जिन्होंने मंदिर को पूरा करने के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया (एज्रा 5)। कार्य फिर से आरंभ किया गया, और लगभग 516 ई.पू. में मंदिर अन्ततः पूरा करके समर्पित किया गया (एज्रा 6)।

लगभग सात वर्ष के पश्चात, फारस के राजाओं ने एज्रा को यरूशलेम जाने का दायित्व दिया, कि वहाँ जाकर बलिदान चढ़ाए और व्यवस्था को सिखाए तथा पालन करवाए (एज्रा 7)। वह 458 ई.पू. में गया, सैकड़ों अन्य यहूदियों के साथ (एज्रा 8)। उसके देश में आने के बाद, एज्रा को ज्ञात हुआ कि यहूदियों ने व्यवस्था का पालन नहीं किया है। इसलिए उसने सुधारों को स्थापित किया, विशेषकर मिश्रित विवाहों के विघटन के संबंध में (एज्रा 9; 10)।[27]

इसके लगभग तेरह वर्ष पश्चात, 445 ई.पू. में, नहेम्याह आया, यरूशलेम की दीवार के पुनर्निर्माण के लिए। कुछ वर्षों के अन्तराल के पश्चात उसने भी मिश्रित विवाहों और अन्य आवश्यक सुधारों के विषय व्यवहार किया।

उद्देश्य

एज्रा की पुस्तक लिखने में लेखक का उद्देश्य क्या था?

इतिहास को सुरक्षित रखना

एज्रा का लेखक, निःसंदेह भावी पीढ़ियों के लिए निर्वासन के बाद के समय का इस्राएल का इतिहास सुरक्षित रखना चाहता था। ऐतिहासिक लेखों के आधार पर, इस पुस्तक को ऐतिहासिक दस्तावेज़ होना था।[28] इसका यह अभिप्राय कदापि नहीं है कि एज्रा का लेखक मात्र विशुद्ध इतिहास, केवल इतिहास ही के लिए, या केवल "विषयनिष्ठ इतिहास" (यदि ऐसा कुछ होता है तो), लिखने में ही रुचि रखता था। उसने इतिहास-उद्देश्य-के-साथ लिखा, एक विषयवस्तु पर इतिहास का प्रभुत्व था। इस कारण लेखक ने कुछ ऐसी जानकारी को छोड़े रखा, जिसे कोई "सांसारिक इतिहासकार" सम्मिलित कर लेता, और कुछ ऐसा सम्मिलित किया जिसे कोई अन्य इतिहासकार छोड़ देता। उदाहरण के लिए, उसने मंदिर के पूरा हो जाने से लेकर एज्रा के लौट कर आने के मध्य के दशकों के विषय कुछ नहीं कहा, क्योंकि उन वर्षों की घटनाएं उसके उद्देश्य की प्राप्ति के लिए आवश्यक नहीं थीं।

धर्मज्ञान की शिक्षा प्रदान-करना

एज्रा में सुरक्षित रखे गए इतिहास का उद्देश्य (जैसा कि पुराने नियम की अन्य इतिहास की पुस्तकों में है) परमेश्वर के विषय में तथा इस्राएल के साथ उसके व्यवहार के विषय में सिखाना था। यह पुस्तक क्या सिखाती है?

पहला, यह सिखाती है कि कैसे परमेश्वर ने इस्राएल को सक्षम किया - यद्यपि इस्राएल गौण और लगभग असहाय था, उसके पास कोई धन-संपत्ति या स्वतंत्रता नहीं थी - परमेश्वर के लोग बनकर बचे रहने के लिए। वे किसी राजा और राज्य पर आधारित राष्ट्र होने के स्थान पर व्यवस्था पर आधारित धार्मिक समुदाय बने।

दूसरा, यह पुस्तक, नहेम्याह की पुस्तक के साथ, प्रकट करती है कैसे परमेश्वर ने उस श्राप को उलट दिया जिसे उसने राष्ट्र पर डाला था जब उसने बाबुल के द्वारा यहूदा का विनाश करवाया। ये दोनों पुस्तकें मिलकर चार विषयों के बारे में हैं: (1) देश को वापस लौटना (एज्रा), (2) धर्म की पुनःस्थापना (एज्रा), (3) नगर का पुनः जागृति (नहेम्याह), और (4) वाचा का नवीनीकरण (नहेम्याह)। इन विषयों को संबोधित करते हुए, ये पुस्तकें दिखाती हैं कि कैसे परमेश्वर ने अपने लोगों को सक्षम किया कि वे बाबुल की बंधुवाई और नाश के दुष्प्रभावों का प्रतिरोध कर सकते हैं। बाबुल के लोग यहूदियों को निर्वासित कर के बाबुल ले गए थे, जरूब्बाबेल उनमें से कुछ को वापस लेकर आया। बाबुल के लोगों ने मंदिर का नाश किया; जरूब्बाबेल ने उसे फिर से बनवाया। बाबुल के लोगों ने यरूशलेम शहर को ध्वस्त किया था, उसकी दीवार को ढा दिया था; नहेम्याह ने उसका पुनर्निर्माण किया। यहूदा पर इसलिए विनाश आया क्योंकि लोगों ने उनके साथ स्थापित की गई परमेश्वर की वाचा का उल्लंघन किया था; नहेम्याह के अधीन उन्होंने वाचा का नवीनीकरण किया। लेख सिखाता है कि उसी परमेश्वर ने उस सब को उन्हें

लौटा कर भी दे दिया, जो उसने अपने लोगों को दण्ड देने के लिए उनसे ले लिया था।[29]

मूल्य

एज्रा की पुस्तक अभी भी शिक्षा देती है। आज के लोगों के लिए, यह प्रकट करती है (1) परमेश्वर की आज्ञाओं को सीखने और उनके अनुसार जीवन जीने के महत्व को; (2) कि परमेश्वर अपने लोगों में होकर अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सर्वाधिक प्रतिकूल परिस्थितियों में भी कार्य कर सकता है; और (3) यह तथ्य कि परमेश्वर फिर से अवसर प्रदान करने वाला परमेश्वर है। जिस प्रकार परमेश्वर ने यहूदा के लोगों को दोबारा अवसर दिया कि वे अपने गृहभूमि में आशीषित हों, वह हमें भी दोबारा अवसर प्रदान करता है कि हम पापों से बचें और उसकी सेवा करना सीख सकें, जब तक कि समय और जीवन हैं।

रूपरेखाएँ

एज्रा की पुस्तक दो भागों में विभाजित है, प्रत्येक भाग की अपनी प्रमुखता है:

I. एज्रा 1-6: देश को यहूदियों की प्रथम वापसी (538 ई.पू.) और उसके परिणाम
II. एज्रा 7-10: एज्रा के अधीन वापसी (458 ई.पू.) और अधिक लोगों के साथ तथा सुधारों का लागू किया जाना

एक अधिक विस्तृत रूपरेखा *मर्सर डिक्शनरी ऑफ द बाइबल* पर आधारित है:

I. यरूशलेम को वापसी और मंदिर का पुनर्निर्माण (1:1-6:22)
  A. कुस्रू की राजाज्ञा (1:1-4)
  B. मंदिर के पुनर्निर्माण के लिए भेंटें (1:5-11)
  C. वापस लौटने वालों की सूची (2:1-70)
  D. मंदिर का पुनर्निर्माण (3:1-13)
  E. मंदिर तथा शहर के पुनर्निर्माण का प्रतिरोध (4:1-24)
  F. मंदिर के पुनर्निर्माण का पूरा होना (5:1-6:22)
II. एज्रा का वापस लौटना और सुधार (7:1-10:44)
  A. एज्रा, शास्त्री (7:1-8:36)
  B. एज्रा, सुधारक (9:1-10:44)[30]

समाप्ति नोट

[1]*2 एस्द्रास* (*4 एज्रा*) 14.44-48. [2]पीटर आर. ऐक्रॉयड, "एज्रा," में *हार्पर्स बाइबल डिक्शनरी*, एडिटर पौल जे. एकटेमियर (सैन फ्रांसिस्को: हार्पर एण्ड रो, 1985), 296. [3]इन दोनों पुस्तकों के

भीतरी प्रमाण संकेत करते हैं कि मूल में ये पृथक लेख थे जिन्हें बाद में एकीकृत कर दिया गया। (एडविन एम. यमूची, "एज्रा-नहेम्याह," में *द एक्सपोजिटर्स बाइबल कमेंट्री*, वॉल्यूम 4, *1 राजा-अय्यूब*, एड. फ्रैंक ई. गैब्लिन [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जोंडरवैन पब्लिशिंग हाउस, 1988], 572-73.) सी. एफ. कीएल ने प्रस्ताव दिया कि एज्रा मूल में नहेम्याह से पृथक था और इब्रानी बाइबल में इन दोनों पुस्तकों को मिलाकर एक कर दिया गया जिससे कैनन में पुस्तकों की संख्या इब्रानी वर्णमाला के अक्षरों की संख्या के समान बन जाए। (सी. एफ. कीएल, *द बुक्स ऑफ एज्रा, नहेम्याह, एण्ड एस्तेर*, ट्रांस. सोफिया टेलर, बिबलिकल कॉमेन्ट्री ऑन द ओल्ड टेस्टामेंट [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, एं. डी.], 6-7.) [4]ग्लीसन एल. आर्चर, जूनियर, *ए सर्वे ऑफ द ओल्ड टेस्टामेन्ट इंट्रोडक्शन*, रिव. और एक्सप. (शिकागो: मूडी प्रेस, 2007), 389. [5]ऐसे समूहित करना जोसेफस के लेखों में कैनन की पुस्तकों की संख्या में निहित है (*अगेंस्ट एपियोन* 1.8), और इसे तालमुड में और अधिक स्पष्ट किया गया है (*सैन्हेड्रिन* 93b; देखें *बाबा बाथरा* 14b). पुरातन काल में यहूदी इस संपूर्ण कृति को "एज्रा" कहते थे (यूसिबियस *एकलिसियैस्टिकल हिस्ट्री* 4.26). [6]"एपोक्रिफा" नाम है उन कैनन से बाहर की पुस्तकों के समूह का जो कैथोलिक बाइबल में तो पाई जाती हैं परन्तु अन्य बाइबिलों में नहीं। वे इब्रानी बाइबल के संपूर्ण हो जाने के पश्चात उत्पन्न हुईं और उन्हें कभी उसका भाग नहीं माना गया; इसलिए उन्हें प्रेरणा पाए हुए पवित्र-शास्त्र का भाग स्वीकार नहीं किया जाता है (2 तीमु. 3:16, 17)। शब्द "एपोक्रिफा" का अर्थ कुछ "छिपा हुआ" के समान है और संकेत करता है कि पुस्तकें या तो नकली हैं या असत्य हैं। दूसरे शब्दों में, वे पुराने नियम के कैनन का होने जैसी प्रतीत तो हो सकती हैं, परन्तु वास्तव में हैं नहीं। इस उपनाम से बचने के लिए उन्हें कभी-कभी, "एपोक्रिफा" के स्थान पर, "ड्यूट्रोकैनन" (अर्थात "दूसरा कैनन") भी कहा जाता है। [7]ब्रूस एम. मेट्ज़गर एण्ड रॉनल्ड ई. मर्फी, एड्स., "इंट्रोडक्शन टू 1 एस्ड्रास," में *द न्यू ऑक्सफोर्ड एनोटेटिड बाइबल विद द एपोक्रिफल/ड्यूट्रोकैननिकल* बुक्स (न्यू यॉर्क: ऑक्सफर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, 1991), 259AP. [8]1 एस्ड्रास की पुस्तक सेपटूआजेंट (LXX) पाए जाने वाले इतिहास/एज्रा/नहेम्याह के यूनानी भाषा के अनुवाद से भिन्न है। प्रत्यक्षतः जोसेफस ने 1 एस्ड्रास की पुस्तक को एज्रा से अधिक महत्व दिया जब उसने निर्वासन के बाद के समय के इतिहास को लिखा, क्योंकि उसे पढ़ना अधिक सरल था। (आर. के. हैरिसन, *इंट्रोडक्शन टू द ओल्ड टेस्टामेंट* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1969], 1194-95.) [9]एच. जी. एम. विलियमसन ने पुष्टि की, कि 1 एस्ड्रास "मुख्यतः 2 इतिहास 35-36; एज्रा; एवँ नहेम्याह 8:1-13" का अनुवाद है। (एच. जी. एम. विलियमसन, *एज्रा, नहेम्याह*, वर्ड बिबलिकल कॉमेन्ट्री, वोल. 16 [वाको, टेक्सस: वर्ड बुक्स, 1985], xxii।) [10]उद्धृत की गई समानताओं में एक समान आयतें, समान शब्द और विषय ("सूचियों के लिए प्रीति," "धार्मिक उत्सवों के विवरण के विषय," और कुछ वाक्यांशों, और साथ ही "लेवियों और मंदिर के सेवकों की प्रमुखता"), तथा एक समान धर्म-विज्ञान (यामाउचि, 575-76). दोनों कृतियों में महत्वपूर्ण भिन्नताएं भी प्रगट हैं। (लेस्ली सी. एलेन और टिमोथी एस. लानिएक, *एज्रा, नहेम्याह, एस्तेर*, न्यू इंटरनैशनल बिबलिकल कॉमेंट्री [पी-बौडी, मैसाच्युसेट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशेर्स, 2003], 9.)

[11]हेनरी एच. हैल्ली, *हैल्लीस बाइबल हैंडबुक*, 24th एडिटर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ॉनडरवैन पब्लिकेशन हाउस, 1965), 235. [12]हैरिसन, 1150. औरों ने एज्रा/नहेम्याह की तिथि चौथी शताब्दी ईस्वी पूर्व के आरंभ या इससे भी बाद की लगाई है। कीएथ एन. शोविल्ले का मानना है कि प्रथम व्यक्ति खण्ड 400 ई.पू. के लगभग लिखे गए परन्तु उन्हें "यरूशलेम और यहूदा में यहूदी समुदाय के लाभ के लिए" लगभग 300 ई.पू. तक संकलित नहीं किया गया, सिकंदर महान के विजय अभियान के बहुत बाद तक। (कीएथ एन. शोविल्ले, *एज्रा-नहेम्याह*, द कॉलेज प्रैस NIV कॉमेंट्री [जोपलिन, मिसौरी: कॉलेज प्रैस पबलिशिंग कम्पनी, 2001], 27-28.) परन्तु, इसकी बहुत ही कम संभावना है कि इनमें से कोई भी पुस्तक चौथी शताब्दी ईस्वी पूर्व के आरंभ के बहुत बाद लिखी गई होगी। इस निष्कर्ष के लिए कि इतिहास की पुस्तक को एज्रा/नहेम्याह के बाद लिखा गया होगा एक तर्क है कि उसे इब्रानी बाइबल में उन दोनों पुस्तकों के बाद रखा गया है। [13]उस "पुस्तक" में नहेम्याह

की पुस्तक और साथ ही एज्रा की पुस्तक भी सम्मिलित हो सकती हैं। [14]जौन सी. व्हिटकॉम्ब, जूनियर, "एज्रा," में *द वाइक्लिफ बाइबल कॉमेंट्री*, एडिटर चार्ल्स एफ. फैइफर एण्ड एवेरेट एफ. हैरिसन (शिकागो: मूडी प्रैस, 1962), 423. [15]अरामी "उत्तरपश्चिम की यहूदियों की एक भाषा है जो इब्रानी से निकटता से संबंधित है।" यह मसीह से पूर्व की प्रथम सहस्त्राब्दी के दूसरे अर्ध-भाग के अधिकांश समय में "प्राचीन निकट पूर्व में संपर्क और राजनीति/कूटनीति की अंतरराष्ट्रीय भाषा थी" और नए नियम के समय में "बोली जाने वाली एक प्रमुख भाषा थी।" (एफ. डब्ल्यू. डॉब्स-एल्लसॉप, "अरामिक," *ईर्डमैंस डिक्शनरी ऑफ द बाइबल*, एड. डेविड नोएल फ्रीड-मैन [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 2000], 84.) [16]पुराने नियम के अन्य अरामी के खण्ड उत्पत्ति 31:47; यिर्मयाह 10:11; दानिय्येल 2:4-7:28 में मिलते हैं। [17]कुछ यह भी सुझाव देते हैं कि तात्पर्य अर्तक्षत्र III से हो सकता है जिससे एज्रा की वापसी चौथी शताब्दी ईस्वी पूर्व के दूसरे अर्ध-भाग में हो जाएगी। [18]लेस्ली सी. एलेन पुष्टि करते हैं कि आज अधिकांश विद्वान स्वीकार करते हैं कि एज्रा नहेम्याह से पहले यरूशलेम गया। (एलेन एण्ड लानिएक, 8.) [19]डेरेक किडनर, *एज्रा एण्ड नहेम्याह*, द टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेंट कॉमेन्ट्रीस (डाउनर्स ग्रोव, इल्लिनोय: इन्टर-वर्सिटी प्रैस, 1979), 158. [20]सुलेमान के देहांत के पश्चात, राज्य विभाजित हो गया। दस उत्तरी गोत्रों को "इस्राएल" कहा गया, और दो दक्षिणी गोत्र "यहूदा" नाम से जाने गए। बाबुल के निर्वासन के पश्चात, शब्द "इस्राएल" और "यहूदा" बाबुल से लौटने वाले परमेश्वर के लोगों के लिए परस्पर अदला-बदली के साथ प्रयोग होने लगे, चाहे वे यहूदा के दक्षिणी राज्य से ही क्यों न हों।

[21]यह यहूदियों और यरूशलेम के विरुद्ध "दंगैत और घिनौने नगर" जो कि "राजाओं के विरुद्ध सिर उठाता आया है," वह जिसमें "दंगा और बलवा होता आया है" (4:12, 19) होने के आरोप का आधार था। [22]बाद में, गदल्याह अधिकारी की हत्या के पश्चात, शेष बचे यहूदियों में से कुछ मिस्र को भाग गए, और अपने साथ यिर्मयाह को भी ले गए (2 राजा 25:25, 26; यिर्म. 41:1, 2; 43:4-7). [23]विलापगीत के पुस्तक यरूशलेम के विनाश पर यिर्मयाह के दुःख को व्यक्त करती है। [24]इसमें दानिय्येल और उसके तीन यहूदी मित्र भी सम्मिलित थे (दानिय्येल 1-6). [25]बाबुल में यहूदियों की बनी हुई उपस्थिति और यहूदी गतिविधियों के केन्द्र में बाबुल का महत्व इस तथ्य से प्रगट है कि यहूदी परंपराओं का एक बड़ा संग्रह: द बेबिलोनियन तालमुड वहीं से उत्पन्न हुआ था। इस संग्रह का पूर्ण होने की तिथि छठी या सातवीं ईस्वी पश्चात है, यहूदियों के बंधुवाई से लौटने के हज़ार वर्ष के भी बाद। [26]एज्रा 2:64, 65 के अनुसार, "समस्त मण्डली मिलकर 42,360 की थी। इन को छोड़ इनके 7,337 दास-दासियां और 200 गान वाले और गाने वालियां थीं।" [27]मिश्रित विवाह परमेश्वर के लोगों और अन्यजाति-मूर्तिपूजकों के मध्य वैवाहिक गठबंधन थे, जो वाचा की भूमि में प्रवेश करने से पूर्व परमेश्वर द्वारा वर्जित किया गया व्यवहार था। उसने उन्हें सचेत किया था कि अन्यजाति-मूर्तिपूजकों से विवाह करने के द्वारा उनके मन उससे फिर जाएँगे और वे लोग उन्हें अन्य देवी-देवताओं की उपासना की ओर फेर देंगे (व्यव. 7:3, 4). [28]यहूदियों की अपने इतिहास को भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखने में रुचि अन्य ऐतिहासिक लेखों से प्रगट है और उन लेखों को बचाए रखने के द्वारा भी जिनका प्रयोग एज्रा को लिखने के लिए किया गया। [29]जैसा कि निर्गमन में हुआ, इस्राएल के सुनहरे बछड़े की उपासना करने के पाप के बाद (निर्गमन 32:4-8), परमेश्वर ने इस्राएल को दण्ड दिया और फिर उन्हें उनके पूर्व स्थिति में बहाल करने के लिए जो कुछ आवश्यक था वह किया। फ्रेड्रिक कार्लसन होल्मग्रेन की एज्रा और नहेम्याह पर लिखी कॉमेंट्री का शीर्षक है *इस्राएल अलाईव अगेन*, और इन पुस्तकों के विषय को उपयुक्त रीति से बताता है। होल्मग्रेन ने कहा, "हमारा लेखक मंदिर के समुदाय की स्थापित होने के विषय चिंतित है - भूमि में यहोवा के लोगों के लिए नए आरंभ में।" (फ्रेड्रिक कार्लसन होल्मग्रेन, *इस्राएल अलाईव अगेन: अ कॉमेंट्री ऑन द बुक्स ऑफ एज्रा एण्ड नहेम्याह*, इंटरनैशनल थियोलॉजिकल कॉमेंट्री [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1987], 36)। [30]डेविड ए. स्मिथ से अनुकूलित, "एज्रा, बुक ऑफ," में मरसर्स *डिक्शनरी ऑफ द बाइबल*, एड. वॉटसन ई. मिल्स (मैकॉन, जार्जिया: मर्सर यूनिवर्सिटी प्रैस, 1990), 286.